मैं जिससे शादी करूँगी...

सी एन सुब्रह्मण्यम

यह किस्सा एक दिलेर व दिलदार लड़की का है। और एक बादशाह की प्रेम कहानी भी है। हमीदा बानो नाम की इस लड़की की उमर कोई चौदह साल की रही होगी। और वह बादशाह भी कोई विशाल साम्राज्य का शहंशाह नहीं था। दुश्मनों से हारकर इधर-उधर भटकता बादशाह था। मगर था तो बादशाह। हम मुगल वंश के दूसरे बादशाह हुमायूँ की बात कर रहे हैं।

हमीदा बानो

हुमायूँ की सौतेली माँ के घर दावत थी। इस दावत में एक हमीदा बानो बेगम भी थी। हुमायूँ उस पर फिदा हो गया। वह उससे शादी करना चाहता था। इससे आगे की कहानी हम हुमायूँ की बहन से गुलबदन बेगम से सुनते हैं...

दूसरे दिन बादशाह मेरी माँ के पास पहुँचे। और बोले कि किसी को भेजकर हमीदा बानो को बुलवाओ। पर हमीदा नहीं आई। उसने कहलवाया कि अगर मुझे बुलाने का मकसद यह है कि मैं बादशाह को सलाम करूँ तो वह तो मैं कल ही कर चुकी हूँ। अब किसलिए आऊँ? कई बार उसे बुलवाने की कोशिश हुई लेकिन वह मना करती रही।

हुमायूँ अपनी सौतेली माँ से मिन्नतें करता रहा कि वह किसी तरह हमीदा को शादी के लिए राज़ी कर ले। उसकी कोई भी शर्त मंजूर होगी।

मिन्नतों-मनौतियों का यह सिलसिला पूरे 40 दिनों तक चला। पर हमीदा बानो बेगम राज़ी नहीं हुईं। मेरी माँ ने हमीदा को नसीहत भी दी कि आखिर किसी से तो तेरी शादी होगी। तो बादशाह से बेहतर कौन हो सकता है?

इस नसीहत के जवाब में जो हमीदा ने कहा वह एक खुद्दार लड़की ही कह सकती थी। उसके जवाब को पहले फारसी में पढ़ें और बाद में हिन्दी में।

आरे व कसे ख्वाहम रसीद कि दस्ते मन व गिरेबाने उ ब रसद - न आं कि न सके बरसम कि दस्ते मन मीदानम व दामने उ न रसद।

बेशक, मेरा विवाह उस आदमी से होगा जिसके गिरेबान (कमीज़ की कॉलर) तक मेरा हाथ पहुँच सकेगा, न कि उस व्यक्ति से जिसके बारे में मैं जानती हूँ कि उसके दामन (लम्बे कोट) के किनारे तक भी मेरा हाथ पहुँच नहीं सकता।

एक सामान्य लड़की को अगर किसी बादशाह से शादी करने का मौका मिले तो हम सोचेंगे कि वह खुशी-खुशी राज़ी हो जाएगी। लेकिन इस दिलदार लड़की ने तय कर रखा था कि वह उसी से शादी करेगी जो उससे समानता का बरताव करेगा। (गिरेबान हाथ में आने का मतलब है दोनों के बीच में हैसियत का अन्तर ज़्यादा न होना)।

खैर, अन्त में हुमायूँ उसे मनाने में कामयाब हुआ और उनकी शादी भी हुई। हमीदा हुमायूँ के बुरे से बुरे दिनों में भी उसके साथ रही। उसके साथ थार के रेगिस्तान में भटकते हुए एक छोटे-से जगह पर शरण लेकर उसने एक बेटे को जन्म दिया। यही बच्चा बड़ा होकर हिन्दुतान का सबसे प्रसिद्ध बादशाह अकबर बना। अकबर के बारे में कहा जाता है कि वह अपनी माँ की बात कभी नहीं टालता था चाहे वह उसे कितनी ही नापसन्द क्यों न हो।

- क्या तुम्हें लगता है कि शादी के बाद पति व पत्नी के बीच समानता होना चाहिए?
- क्या अमीर व गरीब शादी करें तो उनके बीच समानता का व्यवहार नहीं हो सकता है?
- तुम कौन-कौन से फारसी शब्दों के अर्थ समझ सके, उनकी सूची बनाकर लिखो।

गुलबदन बेगम

गुलबदन बेगम दरअसल हुमायूँ की सौतेली माँ की बेटी थी जो हुमायूँ से बहुत प्यार करती थी। हुमायूँ के मरने के काफी साल बाद अकबर ने उससे आग्रह किया था कि वह बाबर और हुमायूँ की जीवनी लिखे। गुलबदन का *हुमायूँ नामा* एकमात्र ऐसी मुगल इतिहास की किताब है जिसे एक महिला ने लिखा है। इस कारण इस पुस्तक से हमीदा जैसी कई महिलाओं के बारे में और मुगल इतिहास में उनकी भूमिका के बारे में पता चलता है।

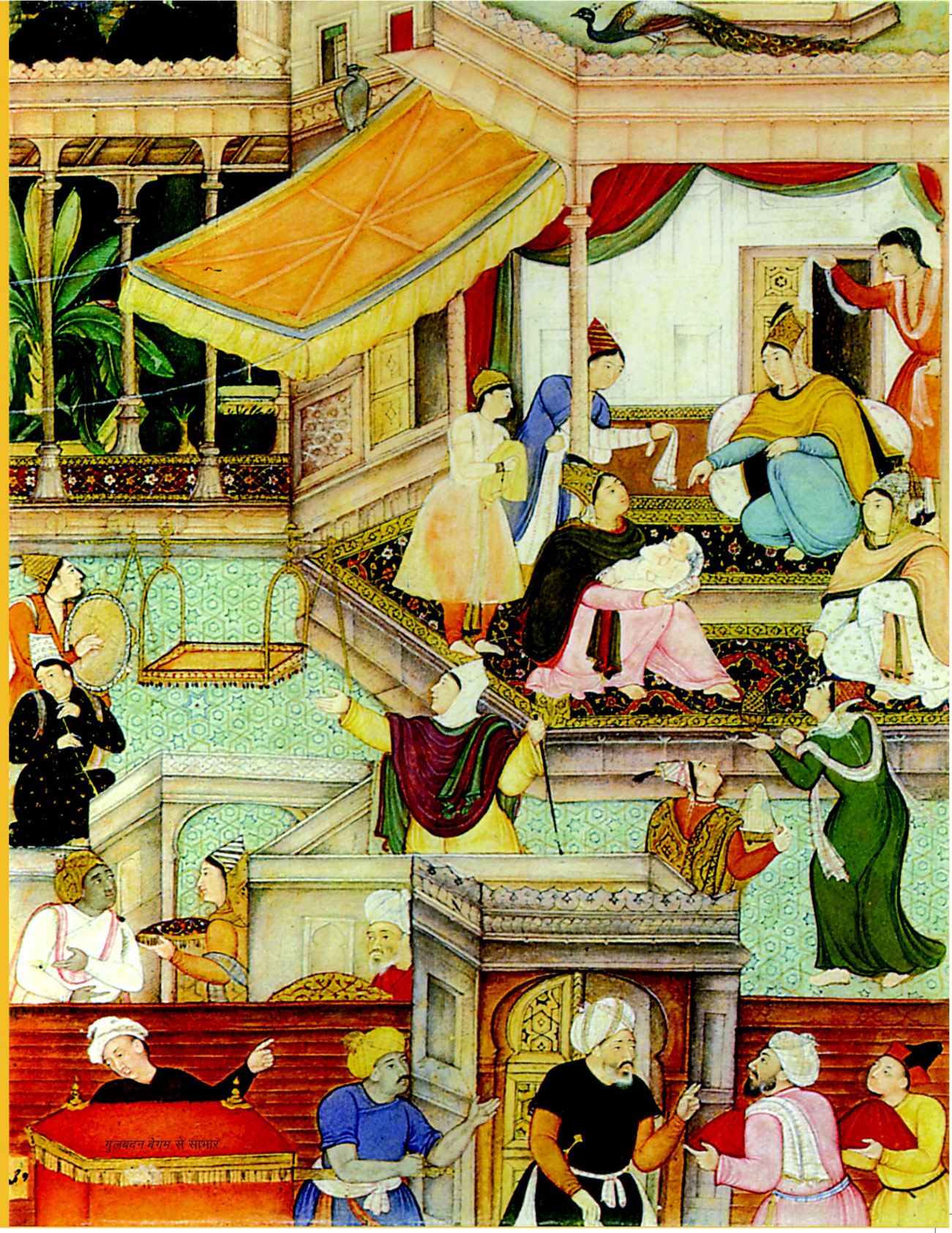

गुलबदन बेगम से साभार